पांच बुलाया पचीस आया वाला हुआ ।
आज दिनांक 11 जून 2015 को जैविक खेती सम्मलेन कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा कुल 16 जिलो के 120 जैविक किसानो ने भाग लिया ।जोधपुर के लोकप्रिय सांसद श्री गजेन्द्र सिंह जी ने मुख्य अतिथि के नात कार्यशाला का उद्घाटन किया ।अध्यक्षता देश के विख्यात जैविक खेती विशेषज्ञ श्री रतन लाल जी डागा ने की।
विशिष्ट अतिथि के नाते देश के जाने माने जैविक कृषि वैज्ञानिक , जिनकी किताबे पढ़कर सारा देश जैविक खेती सीखता है ऐसे श्री अरुण के शर्मा उपस्तिथ थे।तथा इस सारे कार्यक्रम की प्रेरणा तथा रचना के मुख्य शिल्पी , स्वदेशी विचार प्रन्यास के माननीय अध्यक्ष श्री संदीप जी काबरा उपस्थित थे।
कार्यक्रम में अन्य महत्वपूर्ण उपस्तिथि थी श्री सुरेश जी राठी माननीय ट्रस्टी स्वस्थ्य साधना केंद्र ,भारतीय किसान संघ के राजस्थान प्रदेश संगठन मंत्री श्री कृष्ण मुरारी जी ,किसान संघ के वरिष्ठ नेता श्री मानक जी परिहार ,उदयपुर के जैविक कृषि विपणन करता तथा पी जी एस सर्टिफिकेशन के राजस्थान के प्रभारी श्री रोहित जैन,भारतीय किसान संघ के जोधपुर महामन्त्री श्री तुलसाराम जी मुख्य थे ।
कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद श्री गजेन्द्र सिंह जी ने कहा कि जैविक खेती समय की मांग है ।उन्होंने कहा की हमारा यह इलाका हजारो वर्षो से जैविक खेती करता रहा है ,अब पूरी दुनिया में इस का महत्व समझ में आया है।उन्होंने कहा की केंद्र सरकार ने इस बजट में जैविक खेती को बढ़ावा देने के अनेक असाधारण प्रावधान किये है ।हमे उनका लाभ किसानो तक पहुचाने की अवश्यकता है।

पहला सत्र

कार्यशाला का पहला सत्र सम्बोधित करते हुए जैविक कृषि विशेषज्ञ श्री अरुण के शर्मा ने कहा की कहा कि जैविक खाद का निर्माण ,किसान अपने खेत पर करना शुरू करे यह पहला कदम है जैविक खेती का,पहला पाठ है। अनेक प्रकार की जैविक खादों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा की कम्पोस्ट खाद ही किसान के लिए सबसे सरल खाद है और सबसे अछी खाद है।उन्होंने कहा की किसान अपना बीज अपना खाद खुद बनाये अपना कीट नियंत्रक खुद बनाये , बाजार को बाय बाय कहे तभी सफल जैविक खेती होगी। उन्होंने कहा की किसान के पास अगर एक बीघा जमीन , एक नीम का पेड़ तथा एक देशी गाय हो तो उसको जीवन यापन में समस्या नही आ सकती ।

दूसरा सत्र

कार्यशाला के दूसरे सत्र को सम्बोधित करते हुए देश के जाने माने जैविक कृषि विशेषज्ञ श्री रतन लाल जी डागा की खेती करना हम सब जानते है , बस थोड़ी सी समझदारी से काम करेंगे तो हम अपनी लागत कम कर सकते है ।और लाभ बढ़ा सकते है ।जमीन की तयारी की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा की बिना जरूरत ट्रैक्टर से जमीन को जोतने की अवश्यकता नही है ,अनावश्यक रूप से तवी देने की आवश्यकता नही है।कई बार किसान बारिस की फसल के बाद तवी लगा कर जमीन छोड़ देते है और बाद में आंधियों से उसकी उपजाऊ परत उड़ जाती है।ऐसे ही बुआई की पंक्तिया उत्तर से दक्सिन दिसा में करने से सूर्य की भरपूर रौशनी मिल सकती है जिससे फसल ज्यादा होगी और रोग कम होंगे ।उन्होंने बुवाई से पहले तवी लगाने केलिए भी सुबह या शाम के समय का आग्रह किया और कहा की ठंडे समय में तवी लगाने से आसपास के पक्षी आ कर कीड़े मकोड़े खा सकेंगे जिससे फसल में रोग कम लगेंगे ।कम्पोस्ट खाद की सरल विधि का भी विस्तार से वर्णन किया और कहा की यह भी हमारी लागत कम करने का सफल उपाय है।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए श्री डागा जी ने कहा कि खेती में पानी देना भी एक कला है । हम लोग क्या करते है ? जमीन को पानी देते रहते है , वास्तव में पोधो को पानी देना होता है, जैसे पौधा प्यासा हो तब पानी देना होता है , उससे पानी भी कम लगेगा और फसल अच्छी होगी । एक बार बहुत सारा पानी डालकर यह सोचना की अब तो 5-7 दिन तो खूब है , यह गलत होगा पौधे को रोज देख कर पानी देने का तय करेगे तो कम पानी से अधिक फसल होगी ,वेजिटेटिव ग्रोथ कम होगी और फसल अधिक होगी ।
उन्होंने जितना जल्दी हो सके उतना बून्द बून्द सिचाई अपनाने की सलाह देते हुए कहा की मेरा अपना अनुभव है ,सारी फसलें आप बून्द बून्द सिचाई से ले सकते है ।
फसलों को लगने वाली अनेक बीमारियो से बचाव के अनेक नुस्खे बताते हुए उन्होंने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा की मेने भी देश भर में होने वाले इसी तरह के कार्यक्रमो में सीखा है, आप भी प्रयोग करते रहिये ।

उन्होंने फसलो को रोगों से बचाने के साधारण से सरल नुस्खे जैसे मेहदी के पोधो की बाड़ लगाना तो कहीं हजारे के पौधौ की पंक्ति लगाना ,इसी प्रकार गोबर गोमूत्र तथा अभक्ष्य पौधो की पतियो यथा नीम धतूरा अदि से अनेक कीटनाशको की विधिया बताई और उनके उपयोग बताये ।
उन्होंने कहा की पहले में भी खाद बीज की दुकान वालो को पूछ पूछ कर रोज नया नया जहर लेजाता था और छिड़कता था ।मेने अपने खेत में कितना जहर डाला है आप इसकी कल्पना नही कर सकते, बस अधिक फसल लेने की होड़, क्या भाव पड़ेगी इसका विचार करना अवश्यक है ।
फसल चक्र की चर्चा करते हुए आप ने कहा कि फसल चक्र को ठीक से समझना चाहिए , इसका मतलब होता है की अपना खेत कितना भी छोटा या बड़ा हो उसे चार भागों में बाँट लो ,अब चारो भागो पर अलग अलग जाति वर्ग की फसल ले , फिर अगली सीजन में हरेक भाग में ज़ात बदल कर दूसरी फसल लगाये ,जैसे अनाज गेंहू बाजरा था तो उसकी जगह दलहन लगाये ,तिलहन लगाये , जीरा लगाये इसी प्रकार समान जात की फसल लगाने से रोग अधिक होंगे फसल कम होगी,जैसे गुवार के बाद जीरा लगा दिया तो उखटा रोग लगा ही समझो ।
अब सत्र एकरस हो गया था सभी प्रति निधि अनुभव का अमृत पीने में मस्त हो रहे थे और बातें समाप्त होने का नाम नही ले रही थी , एसी स्थिति में अगली कार्यशाल दो दिन की रखने की घोषणा कर सत्र का समय होजाने की घोषना की गई ।

तीसरा सत्र :

भोजन अवकाश के बाद तीसरा सत्र उदयपुर से पधारे जैविक कृषि विपणन विशेषज्ञ तथा राजस्थान में पी जी एस सर्टिफिकेशन के प्रभारी श्री रोहित जैन ने लिया । पी जी एस सर्टिफिकेशन को सर्वाधिक फार्मर फ्रेंडली बताते हुए आप ने कहा की राजस्थान के किसान हजारो वर्षो से जैविक खेती कर रहे है ,अभी भी सिचाई के अभव में सारा उत्पादन प्राकृतिक रूप से जैविक है ऐसे किसानो को अपने अपने इलाके में तहसील में पचायत समिति में जैविक किसानो का समूह बनाना चाहिए कम से कम एक समूह में पांच किसानो का समूह हो ,एक गांव या ढाणी की ।किसानो की अधिक संख्या 20 तक हो सकती है , भूमि की अधिकतम सीमा इसमें नही रखी गयी है ।
कृषि भूमि के बारे में एक विशेष बात बताते हुए आप ने कहा की थर्ड पार्टी सर्टिफिकेशन में आप अपनी जमीन के एक हिस्से का सर्टिफिकेशन करवा सकते है लेकिन पी जी एस में पुरे के पूरे खेत के लिए फार्म भरना होगा ।
आपको हर साल आपस में एक दूसरे की निगरानी करनी है ,सहयोग करना है और साल में एकबार रिपोर्ट भेजनी है।
तीन साल बाद पुनन: जाँच होगी और प्रक्रिया पूरी होगी ।
जहां सिंचित कृषि है और रसायनों का कीटनाशको का उपयोग हो रहा है या हुआ है वहां फार्म भरने के बाद तिन वर्षो में यह प्रक्रिया पूरी होगी ।
इसमें भी कम से कम 5 किसानो का समुह बना आवेदन करना चाहिए ।

सत्र के बाद प्रश्नोत्तरी का जवाब देते हुए आप ने कहा की पी जी एस सर्टिफिकेशन केवल किसानो के लिए है ।इंडस्ट्री केलिए नही है ।
एक और उत्तर में आप ने बताया की एक्सपोर्ट करने केलिए अभी तक पी जी एस को मान्यता नही दी गयी है, वहां मल्टीनेशनल्स की मोनोपोली है लेकिन अनेक अच्छी बातें अभी हो रही है , हम विस्वास रखे की यह काम भी होगा।एक प्रश्न के उत्तर में श्री रोहित जी ने कहा की इस सर्टिफिकेशन में फार्म की कोई फीस नही देनी है , यह सारा काम बिना किसी फ़ीस के हो जाता है। उन्होंने कहा की इस सम्बन्ध में आप मेरे से 9783223520 या जोधपर में 02912710123 पर सम्पर्क कर सकते है जहा से हर सम्भव सहयोग मिलेगा ।